''रामचरित मानस के पात्रों में निहित जीवन कौशलों की प्रासंगिकता का वर्तमान जीवन कौशल के सन्दर्भ में अध्ययन''

A

SYNOPSIS

SUBMITTED FOR THE PARTIAL

FULLFILLMENT FOR

THE DEGREE OF

DOCTOR OF PHILOSOPHY (Ph.D)

IN EDUCATION

BY RACHANA

UNDER THE SUPERVISION OF

DR. ARUN KUMAR

COLLEGE OF EDUCATION

IIMT UNIVERSITY, MEERUT

YEAR-2021

प्रस्तावना

प्राचीन काल से ही शिक्षा का कार्य मनुष्य को श्रेष्ठ बनाना है, इसमें ज्ञान प्राप्ति, शिक्षण, दक्षता, उचित आचारण आदि सम्मिलित है। इसका प्रयोग जीवन को कौशलों से परिपूर्ण करना एवं तकनिकी, मानसिक, नैतिक विकास करने में किया जाता है। शिक्षा द्वारा मनुष्य के व्यक्तित्व का निर्माण किया जाता है। तथा उसकी अंतनिर्मित क्षमताओं को विकसित किया जाता है। इसी प्रकार सामाजिक विकास के द्वारा सद्व्यवहार, सदाचार, सदाचरण की शिक्षा देकर उसे सामाजिक प्राणी बनाया जाता है। शिक्षा व्यक्ति को समाज का सदस्य एवं अच्छा नागरिक बनने के आवश्यक ज्ञान तथा जीवन कौशल आदि उपलब्ध कराती है। शिक्षा शब्द की व्युत्पति संस्कृत के शिक्ष धातु से हुई है जिसका जिसका अर्थ है सीखना और सिखाना अर्थात सीखने सिखाने की प्रक्रिया को ही शिक्षा कहते है। शिक्षा का महत्व बहुत व्यापक है इसके कार्यक्षेत्र में वह सब कार्य करते है जिनसे मनुष्य को प्राणी मात्र से समाजिक, मानसिक, नैतिक एवं जीवन कौशलों का विकास करते हुए जीवन जीने एवं जिम्मेदार नागरिक बनने तथा सामाजिक आचरण करते हुए कार्यों को समयानुसार निभाने का दायित्व होता है। कहने का तात्पर्य यह है कि शिक्षा व्यक्ति का मार्गातिकरण करते हुए उसकी मूल प्रवर्तियो को नियंत्रित करती है एवं जन्मजात शक्तियों का नियंत्रण करती है। इसी प्रकार शिक्षा द्वारा मनुष्य का मानसिक, नैतिक, सामाजिक विकास के क्रम में मनुष्य को श्रेष्ठ बनाया जाता है। व्यक्ति का सर्वागीण विकास ही शिक्षा का वास्तविक अर्थ है।

शिक्षा जड़ नहीं अपितु चेतन है एक द्विमुखी प्रक्रिया है इस दृष्टि से देखा जाये तो शिक्षा में दो व्यक्तियों का होना आवष्यक है पहला शिक्षक एवं शिक्षार्थी। शिक्षक अपने ज्ञान व कौषलों का प्रयोग करके बालक में आदर्ष मूल्यों एवं जीवन कौशलों को विकसित करता है। दूसरे शब्दों में शिक्षक को दर्शनिक माना गया है जो अपने दर्शन को विकसित करते हुए बालक में वांछनीय व्यवहार एवं विभिन्न पक्षों का अध्ययन करते हुए उन्हें विकसित करने में सहायता करता है तथा छात्र को अध्यात्म एवं आत्मज्ञान के मार्ग की ओर अग्रसर करता है। इस प्रकार शिक्षक शिक्षा का प्रत्यक्ष साधन है जो कि बालक को दर्शन के विभिन्न लक्ष्यों को प्राप्त करने में मदद करता है।

एडमस द्वारा कहा गया है

''शिक्षक दर्शन का क्रियाशील पक्ष है। यही दार्शनिक चिन्तन का एक सक्रिय पहलू है।''

दर्शन तथा शिक्षा का सम्बन्ध

दर्शन तथा शिक्षा दोनों ही मनुष्य का सत्य का ज्ञान एवं आत्मशक्तियों को विकसित करना सिखाते है। इस प्रकार शिक्षा और दर्शन का घनिष्ट सम्बन्ध ही नहीं अपितु ये दोनों एक दूसरे पर आश्रित भी है पगपग पर शिक्षा को दर्शन की सहायता से ही उचित व्यक्तित्व का विकास किया जाता है शिक्षा दर्शन के बिना अधूरी है एवं दर्शन शिक्षा के बिना। अर्थात् दोनों को एक दूसरे का सहारा लेना पड़ता है।

1. दर्शन द्वारा जीवन के लक्ष्यों को निर्धारित किया जाता है एवं शिक्षा के रूप में उसे प्राप्त किया जाता है।
2. शिक्षा एवं चेतन एवं स्वैच्छिक प्रक्रिया है तथा इसको उचित रूप से संचालित करते हुए दर्शन के द्वारा ही ज्ञानस्पद बनाया गया है। शिक्षा बिना मार्गदर्शन के अपने लक्ष्यों को प्राप्त नहीं कर सकती इसीलिए दर्शन शिक्षा के लिए आवष्यक है।
3. दर्शन शिक्षा के विभिन्न अंगों को प्रभावित करता है, कुछ विद्वानों का मत है कि दर्शन द्वारा सूक्ष्म चिंतन किया जाता है एवं शिक्षा द्वारा उसे व्यावहारिक एवं स्थूल बनाया जाता है अतः ये दोनों अलग अलग बातें है इनका आपस में कोई सम्बन्ध नहीं है वरन अन्य शिक्षाशास्त्रियों का मत है कि ये दोनों एक दूसरे पर निर्भर है इन्हें एक दूसरे से अलग बताना बहुत बड़ी भूल है। वस्तुस्थिति यह इन दोनों को अलग नहीं किया जा सकता है। एक के बिना दूसरा अधुरा है। जे0एस0रास ने लिखा है– ''दर्शन तथा शिक्षा एक ही सिक्के के दो पहलू है जो एक ही वस्तु के विभिन्न दृष्टिकोण को प्रस्तुत करते हैं वे एक दूसरे पर अंतनिर्हित है।''
4. यह कथन अक्षरश सत्य है की महान दार्शनिक महान शिक्षाशास्त्री हुए है, इसी प्रकार महान शिक्षाशास्त्री महान दार्शनिक हुए है। प्लेटो सुकरात रूसों फ्रोबेल आदि महान दार्शनिक अंचे शिक्षाशास्त्री हुए है।

जीवन कौशल

जीवन में छात्रों को कौशलों, आवश्यक विशेषताओं, विशिष्ठ परिस्थिति में उचित व्यवहार से परिपूर्ण करन कुशलताओं को दक्ष करने के लायक बनाना ही जीवन कौशल है।

जीवन कौशल शिक्षा

जीवन कौशल शिक्षा से तात्पर्य ऐसी शिक्षा से है जिसमें व्यक्ति को जीवन जीने की विशिष्टाओं का ज्ञान कराया जाता है जो व्यक्ति विशेष द्वारा भिन्न–भिन्न व्यवहारों, सामाजिक जिम्मेदारियों, नैतिकता एवं जीवन से सम्बन्धित कार्यो को सही ढ़ग से करने को ज्ञान देती है अर्थात उनसे अवगत कराती है।

जीवन कौशल शिक्षा की अवधारणा एवं अर्थ

शिक्षा एक ऐसी शिक्षा व्यवस्था है जिसमें बालक को जीवन कौशलों का ज्ञान कराया जाता है तथा उसे विषम परिस्थिति में अपनी योग्यता एवं बुद्धि के साथ समायोजन करके कार्य पूर्ण करें। इसके साथ ही मानव जाति में ऐसी कुशलताओं को विकसित किया जाता है जिससे वह अच्छा नागरिक बन पाता है।

जीवन कौशल की परिभाषाएं

प्रोफेसर एसके दुबे ने जीवन कौशल को इस प्रकार परिभाषित किया है

''जीवन कौशल का आश्य उन दक्षताओं के विकास से है। जो बालक सर्वागीण विकास में योगदान देती है। तथा बालकों को कुशल नागरिक एवं योग्य सामाजिक सदस्य के रूप में विकसित करते हुए उसमें जीवन की विषम परिस्थितियों में समायोजन की योग्यता विकसित करते है।''

श्रीमती आर के शर्मा ने जीवन कौशल को इस प्रकार परिभाषित किया है ''जीवन कौशल का संबंध पूर्ण कुशलताओं की विकास से है। जो कि छात्रों को सामाजिक, आर्थिक राजनीतिक एवं व्यावहारिक क्षेत्र में सफल बनाती है। तथा उन्हें सर्वांगीण विकास की ओर अग्रसर करती है। जिससे कि बालक का विकास पूर्ण मानव के रूप में हो।''

अर्थात् आने जीवन को सहज और सरल बनाना ही जीवन कौशल है।

जीवन को सरल बनाने हेतु कुछ महत्वपूर्ण बातें यह है कि–

1. रोगमुक्त जीवन जीना
2. आलस्य को त्याग करना
3. नयी एवं अच्छी बातें सीखना
4. नित एवं सामाजिक कर्तव्यों का पालन करना
5. प्रतिदिन नए अलोकिक एवं अन्य कार्यों को करने हेतु अनुसंधान करना

कुछ जरूरी जीवन कौशल जिनका हम इस शोध में अध्ययन करेंगे वह इस प्रकार है।

1. आत्मनिर्भरता
2. समस्या समाधान क्षमता
3. ज्ञान प्राप्त करने की प्रवृत्ति
4. तीक्ष्णता (कुशाग्रता)
5. चातुर्यता
6. सरलता
7. मीठा बोलने वाला
8. सहयोगात्मक भावना
9. खोजपूर्ण दृष्टिकोण
10. स्वस्थ दिनचर्या
11. रचनात्मक सोच
12. प्रभावशाली भाषण
13. अंत वैयक्तित्व संबंध
14. संतुलन
15. संवेदना
16. आत्मबोध

17. संवेंगात्मक संतुलन

18. न्यायिक पारदर्शिता

अध्ययन की आवश्यकता एवं महत्व

जीवन कौशलों के माध्यम से बालक का सर्वागीण विकास किया जा सकता है यथा उसे जीवन कौशलों का ज्ञान देना आवष्यक हो जाता है। जीवन कौशलों के अभाव में वह पूर्ण विकास की ओर अग्रसर नहीं हो पता।

आदर्शों एवं मर्यादाओं का ज्ञान

मर्यादित, आदर्श एवं सामाजिक व्यवहार का ज्ञान देने के लिए बालक को जीवन कौशलों का ज्ञान देना आवश्यक हो जाता है। अर्थात सामाजिक प्राणी बनने के लिए बालक को जीवन कौशलों का ज्ञान देने पर आवश्यक है।

समस्या समाधान हेतु

शैक्षिक व अशैक्षिक समस्याओं के समाधान हेतु भी जीवन कौशलों का अध्ययन करना आवश्यक होता है।

संवेदना एवं संवेगात्मक विकास

संवेगों पर नियंत्रण एवं दूसरों के साथ व्यवहार की शिक्षा भी बालक को जीवन कौशलों के माध्यम से दी जाती है।

आत्मानुभूति

आत्मविश्वास, आत्मसम्मान, आत्मबोध हेतु भी बालक को जीवन कौशलों का ज्ञान देना आवश्यक है।

व्यवहारिक ज्ञान का समावेश

बालकों को ऐसी कुशलताओं का ज्ञान दिया जाता है अर्थात् अवगत कराया जाता है जो जीवन जीने हेतु उपयोगी है एवं जिनकी आने वाले समय में आवश्यकता होती है जैसे शीघ्र निर्णय लेना, कुशलता, आत्मविश्वास।

समायोजित होने में मदद करना

जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से बालक में वह गुण उत्पन्न किये जाते है। जिनसे वह सफल होने तथा प्रत्येक क्षेत्र में खुद को समायोजित करने की क्षमता उत्पन्न कर सके।

सकारात्मकता, व्यवहारिकता, आदर्शवादित उत्पन्न करना

बालक के जीवनकाल में कई ऐसे अवसर आते है जिनमें वह विभिन्न क्रियाओं की व्यवस्थाओं में अपना दृष्टिकोण नकारात्मक बना लेते है उस समय वह जीवन कौशलों द्वारा ही अपने को नकारात्मकता से छुटकारा दिला पाता है। जीवन कौशलों के ज्ञान से बालक अपने आप को हर सकारात्मक एवं नकारात्मक परिस्थिति में समायोजन करना सीख जाता।

आत्मविश्वास उत्पन्न करना

आत्मतत्व में सर्वप्रमुख आत्मविश्वास होता है जिसका अभाव होने पर बालक योग्यताओं के होते हुए भी कार्य को पूर्ण नहीं कर पाता इसलिए जीवन कौशल की शिक्षा द्वारा बालक में आत्मविश्वास उत्पन्न करना अति आवश्यक है।

आधुनिकता के प्रति जागरूक होना सीखना

आधुनिकता वह है जिसमें बालक को ऐसी परिस्थिति एवं व्यवस्थाओं के बारे में जागरूक किया जाता है जो भविष्य हेतु आवश्यक है। शिक्षक को चाहिए की वह सदा विचारों के माध्यम से बालक को आधुनिकता में समावेश करने हेतु तैयार कर सके।

विषम परिस्थितियों से समायोजन करना सीखना

शिक्षक के माध्यम से ही बालक को जीवन कौशल की शिक्षा द्वारा विषम परिस्थिति में समायोजन करने हेतु ज्ञान दिया जाता है तथा उसे परस्थिति का सामना करने एवं उसको अवसर में परिवर्तित करने का ज्ञान किया जाता है।

सम्बंधित साहित्यिक अध्ययन

अनवर मौहम्मद इकरार (2014) [1] शिक्षा विभाग कुमाऊ विश्वविद्यालय नैनीताल (उत्तराखंड) ने एक अध्ययन ''रामचरित मानस में निहित शैक्षिक विचारों विवेचनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान

शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता'' में इन्होंने कहा है कि आधुनिक युग में हमने बहुत लम्बी विकास यात्रा कर ली है। घर बैठे दुनिया के कोने से दूसरे कोने की सूचना प्राप्त सकते है। अत्यंत सुख शांति की प्राप्ति के पश्चात भी तृष्णा और लोभ के कारण मनुष्य आध्यात्मिक शांति के लिए भटक रहा है।

किंकर, सुरेशचंद्र (1986) [2] हिंदी विभाग, गुजरात विश्वविद्यालय अहमदाबाद ने एक शोध ''रामचरित मानस में शीलनिरूपण'' मे कहा है कि मानव जीवन में आधार विचार, बात व्यवहार, स्वाभाव संस्कार, शिष्टाचार, सदाचार, मानवता आदि उदापति वृतियों स्थान सर्वोपरी है।

चंद्र, जगदीश (1984)[3] हिंदी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक ने अपने अध्ययन ''रामचरितमानस में नीति तत्वों का विवेचन'' में कहा है कि जीवन को सुख शांतिमय करने, उसमें विकास करने तथा उसे स्थापित प्रदान करने की दिशा में मानव ने समाज में ऐसे नियमों की परम्परा स्थापित की जो हमारे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक तथा अन्य सम्बन्ध क्षेत्रों को सदा से ही प्रभावित करती आ रही है।

मिश्रा, आशुतोष ˙ (2003)[4] हिंदी विभाग, महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय, रोहतक में अपने अध्ययन ''रामचरितमानस का शैली वैज्ञानिक अध्ययन'' में लिखा है कि शैली प्रतिपादन करती है। रामचरित मानस का विश्वव्यापी अध्ययन, अपनी अनिवार्यता का प्रतिदपादन करता है।

मिश्र, रामप्यारे (1980)[5] हिन्दी विभाग, महात्मा गाँधी काषी विद्यापीठ, वाराणसी, ने अपने अध्ययन ''रामचरित मानस का कथा स्त्रोत'' के शोध में यह कहा है कि रामचरित मानस मानवीय और नैतिक मूल्यों, सनातनी आधारों की एक ऐसी विषाल चित्रशाला है जिसमें भारतीय जीवन के सभी रंगों, रेखाओं और आकृतियों की झलक मिल जाती।

शोध के उद्देश्य

1. रामचरित मानस में निहित जीवन कौशलों को पहचानना व सूचीबद्ध करना।
2. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में जीवन कौशलों का अध्ययन करना।

3. रामचरित मानस में निहित विभिन्न पात्रों के जीवन कौशलों का वर्तमान कौशलों के सन्दर्भ में विश्लेषण करना।
4. रामचरित मानस में निहित विभिन्न पात्रों के जीवन कौशलों का वर्तमान कौशलों के सन्दर्भ में उपादेयता।

विषयवस्तु विश्लेषण एवं विधि

सम्बंधित जीवन कौशलों का और विभिन्न पात्रों के व्यावहारिक जीवन का विश्लेषण करना। एतिहासिक एवं दार्शनिक विधि।

सीमांकन

जीवन कौशल वह सकारात्मक योग्यता है जो बालक को रोजमर्रा के कार्यों को सरल बनाने एवं कठनाइयों से जूझने में सामर्थ्यता रखने की क्षमता उत्पन्न करता है। कुल मिलाकर कर जीवन कौशल सामाजिक व्यवस्था में सफलता व लम्बी अवधि तक सुख प्रदान करने के लिए आवष्यक है।

सकारात्मक व्यवहार एवं अनुकूलनता व योग्यतायें है। जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की माँगों एवं चुनौतियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करती हैं रामचरित मानस के पात्रों में निहित जीवन कौषल जैसे समय प्रबंधन, ज्ञान अर्जन की प्रवृत्ति, बुद्धिमता, सरलता, अच्छे संचार कौशल, सहयोग भावना, स्वाबलंबन, आत्मबोध, न्यायपारदर्षिता, संवेगात्मक प्रबन्ध आदि का अध्ययन करेंगे।

संदभ ग्रंथ सूची

1. अनवर म. ई (2014), रामचरित मानस में निहित शैक्षिक विचारों विवेचनात्मक अध्ययन तथा वर्तमान शिक्षा में उनकी प्रासंगिकता (नैनीताल उत्तराखण्ड)
2. किंकर स. (1986) रामचरित मानस में शील निरूपण शोध प्रबन्ध हिन्दी विभाग, गुजरात विवि अहमदाबाद
3. चन्द्र ज. (1984) रामचरित मानस में नीति तत्वों का विवेचन शोध विभाग हिन्दी, महर्षि दयानन्द विवि रोहतक

4. मिश्रा आ. (2003) रामचरित मानस का शैली वैज्ञानिक अध्ययन पृष्ट–195

5. मिश्र र (1980) रामचरित मानस का कथा स्त्रोत शोध प्रबन्ध काशी विद्यापीठ वाराणसी